अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 24 जुलाई, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'पवियक्खणा' शब्द का अर्थ है-

(क) पलंग आदि शय्याओं को (ख) विचक्षण साधक

(ग) पीठ करता है (घ) विचरण करते हुए ( )

(b) कामभोग सुखदायी है -

(क) क्षणमात्र के लिए (ख) अनन्तकाल तक

(ग) चिरकाल तक (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(c) साधक आत्मालोचन एवं आत्मनिरीक्षण करता है -

(क) रात्रि के अंतिम प्रहर में (ख) रात्रि के प्रथम प्रहर में

(ग) उपर्युक्त दोनों सही (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(d) आगामी चौबीसी में श्रीकृष्ण कौनसे तीर्थंकर बनेंगे -

(क) प्रथम-श्री पद्मनाभ (ख) ग्यारहवें- श्री मुनिसुव्रत जी

(ग) पन्द्रहवाँ- श्री निर्मम (घ) बारहवें- श्री अमम ( )

(e) स्त्रीवेद की आगति होती हैं -

(क) 179 की (ख) 285 की

(ग) 371 की (घ) 563 की ( )

(f) दूसरे देवलोक की आगति होती है -

(क) 111 की (ख) 50 की

(ग) 45 की (घ) 40 की ( )

(g) रात्रि भोजन किसका कारण है -

(क) आश्रव का (ख) संवर का

(ग) निर्जरा का (घ) बंध का ( )

(h) पूर्ण सूर्यग्रहण होने पर कितने प्रहर का अस्वाध्याय माना जाता है -

(क) 4 प्रहर का (ख) 8 प्रहर का

(ग) 12 प्रहर का (घ) 16 प्रहर का ( )

(I) जैन धर्म के प्रतिपादक शास्त्रों को कहा जाता है -

(क) आगम (ख) गणिपिटक

(ग) द्वादशांगी (घ) उपर्युक्त तीनों ( )

(j) श्रावक का तीसरा शिक्षा व्रत है -

(क) सामायिक (ख) पौषध

(ग) अतिथि संविभाग (घ) दिशिव्रत ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) जैन श्रमण भ्रमरवृत्ति वाले होते हैं। ( )

(b) आत्मा ही अपने सुख-दुःख का कर्त्ता और अकर्त्ता है। ( )

(c) मनुष्य की इच्छा आकाश के समान अनन्त होती हैं। ( )

(d) जीवों के जाने के स्थानों को आगति कहते हैं। ( )

(e) पहली नारकी की गति 40 की होती है। ( )

(f) नवमें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक के देवों की आगति 15 की होती है। ( )

(g) ग्रैवेयक ग्यारह प्रकार के होते हैं। ( )

(h) साधुजी की गति 90 जाति के देवता हैं। ( )

(i) पूज्य माधवमुनिजी म.सा. ने रात्रिभोजी को रावण की उपमा दी है। ( )

(j) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया को चन्द्रमा की प्रभा का मिल जाना यक्षादीप्त कहलाता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैंने आत्मध्यान से मुक्ति प्राप्त की। .....

(b) मैं भगवान महावीर स्वामी के शासन में पुरुष केवलियों का निर्वाण स्थल रहा। .....

(c) मेरी गति 521 की है। .....

(d) मैं आयुष्य पूर्ण कर आठवें देवलोक तक ही उत्पन्न होता हूँ। .....

(e) मेरी गणना 15 प्रकार के देवताओं में होती है। .....

(f) मेरा त्याग करने से जीव हल्का होता है। .....

(g) हम ऐसे मनुष्य हैं जो आयुष्य पूर्ण कर भवनपति एवं वाणव्यंतर देव तक उत्पन्न होते हैं। .....

(h) मैं एक ऐसी राशि हूँ, जिसमें भवी जीव ही होते हैं। .....

(i) मुझे वर्तमान आगमों को लिपिबद्ध करने का श्रेय प्राप्त है। .....

(j) मैं ऐसा व्रत हूँ, जिसकी आराधना साधुता के जीवन के नजदीक ले जाने के लिए आठ प्रहर तक की जाती है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखिए - **14x2 = (28)**

निम्न गाथाओं को पूर्ण करके लिखिए-

(a) एमे ए ..... रया।।

.....

.....

(b) पक्खंदे ..... अगंधणो।।

.....

.....

(c) संसार ठगने ..... धर्मों का दिया।।

.....

.....

(d) सत्पात्र-पूजन ..... पालन किया।।

.....

.....

(e) किं शर्वरीषु ..... तमस्सु नाथ।।

.....

.....

(f) तुभ्यं नमः ..... भूषणाय।।

.....

.....

(g) महासर्वतोभद्र तप की विधि लिखिए।

.....

.....

(h) अन्तगडदशांग सूत्र के आधार पर बताइए कि किन-किन मुनियों ने ज्ञानाराधना करके मुक्ति प्राप्त की?

.....

.....

(i) अहो भगवन्! किस कारण से जीव संसार को बढ़ाता है और किस आचरण से संसार को घटाता है?

.....

.....

(j) नरक एवं देवगति से आयुष्य पूर्ण कर जीव कहाँ उत्पन्न होते हैं?

.....

.....

(k) गति-आगति के थोकड़े में प्रयुक्त शब्द 179 की लड़ को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

(l) 15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की गति-आगति लिखिए।

.....

.....

(m) चिड़ी कमेड़ी कागला, रात जुगन न जाय।
हे नरदेही मानवा, रात पड़या क्यों खाय।। उपर्युक्त पद का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

(n) रात्रि-भोजन त्याग से होने वाले कोई 4 लाभ लिखिए।

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) महुगार समाबुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणा पिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।। गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(b) अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधग वण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।। गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(c) **अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।**
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।। गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(d) **तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं।**
अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ।। गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(e) **सल्लं कामा विसं कामा, कामा आसीविसोवमा।**
कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दोग्गइं।। गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(f) **'गृहस्थ श्रावक के लिए सेवा-धर्म प्रधान है।' उक्त कथन को अन्तगड़दशा सूत्र के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(g) **जीव सोते हुए अच्छे या जागते हुए अच्छे?**

.....

.....

.....

.....

(h) **श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बाँधता है?**

.....

.....

.....

.....

(i) **30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की गति-आगति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **ग्यारहवाँ पौषध ग्रहण करने की विधि लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **नास्तं ..... लोके। गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **उच्चैरशोक ..... पार्श्ववर्ति। गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(m) **क्रोधाग्नि में ..... मैं व्यस्त हूँ। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(n) **सद्वृत्ति से ..... गँवाया व्यर्थ ही। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....